Dharmesh nanda, Department of Geography.
Govt Degree College, Bagaha-1 (W. Champaran)
Babasaheb Bhimrao Ambedkar University Muzaffarpur (Bihar)

Geography (Hons.) B.A. part-1

Paper-1

Topic

वाताग्र (Front)

Dharmesh nanda
Assistant Pro. (Guest
Geography Departmen

वाताग्र (Front)

वाताग्र एक ढालू सीमा होता है जिसके सहारे दो विपरीत वाले वायु मिलती है. जब अभिसरण करने वाले वायु के बीच विस्तृत संक्रमणीय प्रदेश रह जाता है तो उसे वाताग्र प्रदेश कहते हैं। वाताग्र न तो धरातल के समान्तर होता है न कि लम्बवत बल्कि कुछ कोण पर झुका होता है। वाताग्र हजारो किलोमीटर लम्बा और 5-100 किमी॰ चौड़ा और 3-4 किमी॰ ऊँचा होता है।

दूसरे शब्दों में,

जब दो विपरीत स्वभाव वाली वायु राशियां एक-दूसरे के संपर्क में आती हैं तो इनके बीच एक असांतत्य पृष्ठ का निर्माण हो जाता है। इसे ही वाताग्र कहा जाता है। इस प्रकार वाताग्र वह सीमातल है जो दो वायुराशियों को एक-दूसरे से अलग करता है। नये वाताग्रों का निर्माण या क्षीणप्राय वाताग्रों के पुनः शक्तिशाली होने की प्रक्रिया को वाताग्र जनन कहा जाता है। इस शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम बर्जरान द्वारा किया गया था। वाताग्रों के निर्बल होने या पूर्ण रूप से विघटित होने की प्रक्रिया को वाताग्र क्षय (Frontolysis) कहा जाता है। दो अलग-अलग तापमान एवं घनत्व वाली वायु राशियों के अभिसरण से वाताग्र जनन होता है।

दशाएं

(i) दो विपरीत स्वभाव एक वायु ठंडी भारी तथा शुष्क दूसरी उष्ण, हल्का तथा आर्द्र होता है।
(ii) वायु दो वायुराशियों का अभिसरण

गुण

(i) वायुराशि में गति निचले स्तर पर अधिक होता है।
(ii) वायु की गति 50-80 किमी॰ तक होता है।

(iii) चौड़ाई 5-10 किमी. तक होता है।

(iv) लम्बवत गति वाताग्र पर वायु नीचे से ऊपर उठने लगता है।

प्रकार

(i) उष्ण वाताग्र – जब उष्ण और हलकी वायुराशि आक्रमक रूप शीतल, भारी वायुराशि पर चढ़ती है (1:100 से 1:400)

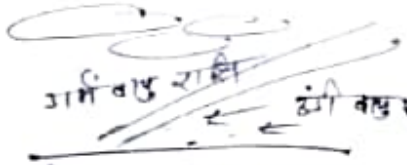

मौसम - विस्तृत क्षेत्र में वर्षा

चित्र : उष्ण वाताग्र

(ii) शीत वाताग्र — जहां आक्रमक शीतल वायु राशि उष्ण वायुराशि शिथिलता से ऊपर उठाती है उसे शीत वाताग्र कहते हैं।

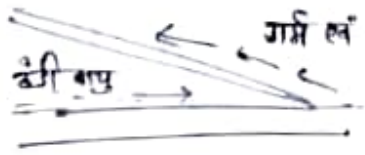

चित्र : शीत वाताग्र

मौसम — झंझावात, गरजना, बिजली चमकना, हिमवर्षा

(iii) अधिविष्ट वाताग्र - (i) शीत (ii) उष्ण

शीतल वायुराशि तीव्रता से आगे बढ़कर उष्ण वायु को धरातल से सम्पर्क समाप्त कर देता है। मौसम - अनिश्चितता

(iv) स्थायी वाताग्र → एक-दूसरे के समानान्तर वायुराशि चलत है।

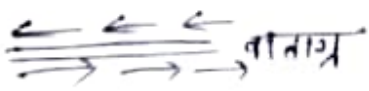

वाताग्र के तीन प्रदेश

(i) अंतरा उष्ण कटिबंधीय प्रदेश— विषुवतरेखा के पास उत्तर पूर्व तथा व्यापारिक पवन के मिलने से वाताग्र का निर्माण होता है और में उत्तर की ओर तथा जाड़े में दक्षिण की ओर होता है।

(ii) ध्रुवीय वाताग्र प्रदेश → मध्य अक्षांशों में ध्रुवीय तथा उष्णकटिबं वायुराशि के मिलने से बनता है

(iii) आर्कटिक वाताग्र प्रदेश → आर्कटिक क्षेत्र में महाद्वीपीय और के मिलने से वाताग्र का निर्माण होता है।